वैदिक कालीन राजनीतिक संगठन

- 17th lecture by -
Mamta Rani
[History Depart.]
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA

21-04-2020

Scanned with CamScanner

वैदिक कालीन राजनीतिक संगठन :-

→ 17th lecture.

→ ऋग्वेदकालीन या पूर्व वैदिक काल विवाह की ओर पितृमूलक परिवार की संख्या आर्यों में चल चुकी थी और समूचा समाज ही परिवार के नमूने पर था। वैदिक काल के लोगों का संगठन कबीलों के रूप में था और उन कबीलों को वे लोग जन कहते थे।

→ एक जन की समूची जनता विशः कहलाती थी। जन या विशः का ही एक राजा होता था।

→ ग्राम का नेता ग्रामणी कहलाता था। आरम्भिक समय जन के भिन्न-भिन्न ग्राम इकट्ठे होते थे।

→ युद्ध में जन का नेता राजा होता था। राजत्व का आरंभ युद्ध में हुआ। ऐसा प्रमाण वैदिक वाङ्मय में मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण में इसका संकेत इस प्रकार है देव और असुर लड़े थे, देवों को असुरों ने हरा दिया।

→ राजा के सहायकों के रूप में पुरोहितों सेनानी और ग्रामणी थे। विदथ सभा और समिति के द्वारा राजा पर नियंत्रण भी रखा जाता था। राजा की सहायता के लिए गुप्तचर भी होते थे। वह दूतों की नियुक्ति भी करता था।

→ पुरोहित राजा को राजनीतिक विषयों पर परामर्श देते थे और उसकी विजय, कुशलता और दीर्घायु के लिए प्रार्थना भी करते थे।

→ सामूहिक कल्याण के लिए विभिन्न यज्ञों का जो आयोजन होता था, उसमें भी पुरोहित लोग सक्रिय भाग लेते थे।

→ पुरप दुर्ग के प्रधान होते थे और इनका काम सैनिक ढंग का होता था। स्पश गुप्तचर होते थे जो जनता की गतिविधि पर दृष्टि रखते थे और राजा को राज्य की स्थिति से अवगत कराते थे।

Scanned with CamScanner

दूत के राजनीतिक कार्य तो महत्वपूर्ण थे ही क्योंकि वे ही तरह-तरह के प्रस्ताव लेकर विभिन्न राज्यों में जाते थे। ये लोग राजा के प्रति ही उत्तरदायी थे, क्योंकि राजा संपूर्ण सत्ता का केन्द्रबिन्दु था।

→ लोगों की सभा जिसे समिति कहते थे में जनकी कार्यवाही होती थी। उसमें राजा और प्रजा समान रूप से उपस्थित होते थे। सभा श्रेष्ठजनों की सभा थी। इसे सामाजिक संगठनों का भी केंद्र समझा जाता था। सभा समूचे जन की परिषद् नहीं थी। सार्वजनिक बातों का फैसला सभा में होता था और न्याय शासन से इसका घनिष्ठ संबंध था।

→ स्त्रियों को सभा में सम्मिलित नहीं होने दिया जाता था। अतिप्राचीन काल में जो संस्था वैदिक कार्यों की थी, उसे ही हम विश्व के नाम से जानते हैं। विश्व को जनसभा कहा गया है। सभा और समिति राजनीतिक संस्थाएँ थीं।

→ समिति समूची विश: की संस्था थी और राज्य की बागडोर उसी के हाथ होती थी।

→ ऋग्वेदकालीन या पूर्व वैदिक काल - वैदिक आर्यों का समाज पशुपालकों और कृषकों का था। विवाह और पितृमूलक परिवार की संस्था भी उनमें चल चुकी थी। समूचा समाज ही परिवार के नमूने पर था। वैदिक समाज का संगठन कबीलों के रूप में था।

→ इन कबीलों को वेलोग जनकहते थे। बिल्कुल आरंभिक दशा में शिकारी मनुष्यों में स्थिर विवाह की प्रथा नहीं हो सकती थी। अतः स्थिर

Scanned with CamScanner

परिवार भी नहीं हो सकता था।

→ आर्थिक जीवन के विकास के साथ स्थायी विवाह की प्रवृत्ति भी उत्पन्न हुई। धीरे-धीरे मातृमूलक समाज से पितृमूलक समाज का विकास भी हुआ।

→ मातृमूलक समाज के अवशेष के रूप में वैदिक काल में भी बहुपति विवाह की प्रथा चलती रही।

→ आर्य और दास अलग-अलग थे और बहुतेरे दास या दस्यु को ही बाद में शूद्र कहलाये, ऐसा अनुमान लगाया जाता है। राज परिवार के लोग राजन्य या क्षत्रिय पुरोहितों के वंशज ब्राह्मण और साधारण लोग वैश्य कहलाते थे।

→ पुरुषसूक्त में कहा गया है जब उन्होंने आदिपुरुष को विभाजित किया तथा ब्राह्मण उसका मुख था। राजन्य उसकी भुजा थी, वैश्य उसकी जाँघ और उसके पैरों से शूद्र निकले।

→ इस उद्घोषणा के बावजूद ऋग्वैदिक काल में जाति प्रथा का पूर्ण विकास नहीं हुआ था। क्योंकि हम देखते थे कि अंतर्जातीय विवाह, व्यवसाय परिवर्तन और सहभोज पर कोई सामाजिक नियंत्रण नहीं था।

→ प्रारंभ में जिस वर्ण व्यवस्था की स्थापना हुई उसमें विभिन्न पेशे वालों की श्रेणियाँ साथ थी। सामान्य जनता विश कहलाती थी।

→ योद्धा और रक्षी क्षत्रिय कहलाते थे तथा पुरोहित ब्राह्मण आगे यज्ञ का क्रियाकलाप बहुत बढ़ जाने से ब्राह्मणों का स्थान और भी महत्वपूर्ण हो गया था। प्रारंभ में सभी श्रेणियों के बीच परस्पर खानपान होता था। और वैवाहिक संबंध भी चलता था।

Scanned with CamScanner

→ समाज के विभाजन को ही लोग वर्ण व्यवस्था भी कहते हैं। पूर्व वैदिक काल में विवाह और भोजन से संबद्ध बंधन नहीं थे और न ऊँच-नीच का भाव ही। विशेष भेद आर्यों और दासों का ही था।

→ जहाँ तक ब्रह्मण, क्षत्रिय का प्रश्न है पूर्व वैदिक काल में कोई भी अपने कर्म से इन श्रेणियों को प्राप्त कर सकता था। प्रारंभ में आर्य और अनार्य दो वर्ण थे। दोनों में रंग का भेद था। चार वर्णों की उत्पत्ति को हम कर्ममूलक कह सकते हैं।

→ पूर्व वैदिककालीन कर्म परिवर्तनशील थे इसलिए वर्ण भी धीरे-धीरे जन्मजात हो गया। ब्रह्मण को विद्वान और मनिषी कहा गया है। वशिष्ट स्वयं तो ब्रह्मण थे परंतु उनके माता-पिता ब्रह्मण नहीं थे। इससे स्पष्ट है कि ब्रह्मण कर्मजात होते थे, जन्मजात नहीं।

→ क्षत्रिय शब्द वीरता का द्योतक है था। देवापि और शांतनु के उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि क्षत्रिय भी जन्म-जात न होकर कर्मज थे।

→ व्यवसाय कृषि और वाणिज्य के भार को वहन करने वाले लोग वैश्य कहलाते थे। पशुपालन वैश्य समुदाय का भी काम था। शूद्र शब्द से कृष्ण वर्ण के लोगों का तात्पर्य है।

→ वैदिक समाज की इकाई परिवार थी। परिवार पितृ-सत्तात्मक था। पिता या पितामह ही घर का प्रधान होता था। उसे गृहपति कहते थे।

-:*:-

Scanned with CamScanner